मेरे कान्हा

काव्य संग्रह

अदिति रूसिया

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मेरे कान्हा

(काव्य संग्रह)

अदिति रुसिया

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश (481331)

978-93-90995-87-5
संपादक- प्रीति समकित सुराना
आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
मोबाईल- 9009423393
ईमेल- **antrashabdshakti@gmail.com**
वेबसाईट- **www.antrashabdshakti**
प्रथम संस्करण- 2026, **अदिति रुसिया**
मूल्य- 200.00 रुपये
मुद्रक- सोनी प्रिंटकॉम, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY ADITI RUSIA
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

हे कृष्ण बचपन से ही तुम्हारी भक्ति की है; आज भी अपना सारा जीवन तुम पर न्योछावर है। इस दिल की आरज़ू यही है कि जीवन सारा तुम्हारी भक्ति में बीते। मेरे सुख दुःख के साथी, मेरे भाई बंधु सब कुछ तुम ही हो जब भी दुखी होती हूँ बस तुम्हारी शरण में आ जाती हूँ, किसी भी समस्या का समाधान तुम्हारे चरणों में आते ही मिल जाता है। तुमसे लड़ती हूँ, झगड़ती हूँ, क्योंकि तुम्हें मैं अपना मानती हूँ; लड़-झगड़ कर अपना दिल मैं तुमसे ही हल्का कर लेती हूँ जिससे मुझे असीम शांति मिलती है फिर तुमसे क्षमा भी माँग लेती हूँ। हे कान्हा धरती पर बहुत विपदा छाई है प्रार्थना यही है मेरी तुमसे सब पर अपनी कृपा का हाथ रखना सबको भक्तिभाव से परिपूर्ण करना। अपने सुदर्शन चक्र से पापियों और अधर्मियों का नाश कर सारे जगत की इस प्यारी धरा की रक्षा करना जिसने हमें अन्न धन दिया जीवन दिया।

हरे कृष्णा हरे कृष्णा।

अदिति रुसिया

वारासिवनी

अनुक्रमणिका

1.	वो मतवाली शाम	
2.	राधे कृष्णा	
3.	यशोदा के लाला, ओ मेरे कान्हा,..!	
4.	छवि	
5.	पूनम का चाँद	
6.	एक ख़्वाब अधूरा सा	
7.	ऋतुराज वसंत	
8.	ज़ख़्म हरे होने लगे	
9.	भक्ति के रंग	
10.	कुछ बात तो है	
11.	विलंब	
12.	सुदर्शन	
13.	पूनम का चाँद	
14.	ऋतुराज वसंत	
15.	मुझे अपने ही रंग में रंग लो	
16.	मेरी लाडो है बड़े भागों वाली	
17.	झूले पड़ गए बाग में	
18.	विलंब	
19.	दया	
20.	लौट आओ न	
21.	सखा	
22.	राग-विराग	
23.	जब भी दूँ आवाज चले आना	
24.	ये वादा रहा तुमसे	
25.	तुम हो तो मैं हूँ	
26.	जन्म जन्म	

वो मतवाली शाम

आज भी याद है कान्हा
वो मतवाली शाम
जब आए थे तुम
भेष बदलकर मिलने मुझसे
कितना सुंदर सौम्य रूप था
कितने रूप धरे तुमने
मुझसे मिलने की ख़ातिर
हर रूप में हर रंग में
तुम बसे हो मेरे मन में
तुमसे मिलन की आस में
जाने मैंने भी
कितने बनाए बहाने
कभी पनघट तो
कभी यमुना तीरे
कभी डाल कदंब के नीचे
छेड़ी है तुमने
मीठी बाँसुरी की तान धीरे धीरे
इंतज़ार रहता है मुझको कान्हा
उस मतवाली शाम का
निहारती हूँ आज भी
तुम्हारी वाट मैं बैठ

यमुना के तीरे
कब आओगे तुम श्याम
आ भी जाओ
अब इतना न सताओ
आया फिर सावन झूमके
छाई है घटा घनघोर
आई है फिर आज
मतवाली शाम
ले के संदेशा तुम्हारा
मेरे श्याम।

राधे कृष्णा

जहाँ कदम की डाल हो
नीचे बैठे मेरे गोपाल हों
संग में राधा रानी हो
पंखा झले गोप ग्वाल हो
रखा माखन का थाल हो
भोग लगाते मदन गोपाल हों
ख़ूब सजा चौपाल हो
संग बलदाऊ सा भाई हो
सखा सुदामा जैसा हो
प्रेम की जहाँ वर्षा हो
बाँसुरी की धुन बजती हो
यमुना जी तट हो
जहाँ वंशीवट हो
ही कृष्ण कन्हाई तुम मेरे सामने हो
यही हमारी विनती है
जब प्राण हमारे निकले तो
सामने हमारे राधा कृष्ण हो।

ओ मेरे कान्हा,..!

कानों में कुण्डल
माथे पे मुकुट
संग में मोरपंख
उसमें है लटकन
पहने हैं कान्हा
ओ मेरे कान्हा,..!

आँखों में काजल
होठों में लाली
हाथों में वेणु
उसमें है लटकन
बजाएँ मोहन
ओ मेरे कान्हा,..!

अंग में अचकन
संग में दुशाला
कम्मर में करधन
उसमें है लटकन
पहने है कान्हा
ओ मेरे कान्हा,..!

पाँवों में पायल
पायल में घुँघरु
बाजे वो रुनझुन
उसमें है लटकन
नाचे हैं मोहन
ओ मेरे कान्हा,..!

कान्हा और रुक्मणी
सुंदर है जोड़ी
संग में है राधा
झूले में बैठी
उसमें है लटकन
झूले हैं कान्हा राधा के संग
ओ मेरे कान्हा,..!

छवि

राधे कृष्ण की प्रीत निराली
सारे जग से है ये निराली
प्रीत के रंग में रंग जाए तो
एक हो जाती इनकी छवि प्यारी प्यारी

कृष्ण जब जब बजाएँ बांसुरी
दौड़ के आती हैं देखो राधा प्यारी
न वो देखें पाँव के छाले
सुध बुध खोके, काम को तज के,
भागी आती प्राण पियारी।

कान्हा बैठे यमुना के तीरे
सहलाते हैं पैरों को राधा के धीरे-धीरे
राधा कहती रुक जाओ कान्हा
छुओ न हमारे पैरों को तुम तो हमारे प्राण पियारे

पग न धरा करो धरा पे राधा प्यारी
नाज़ुक कोमल पग हैं तुम्हारे
राहों में मैं फूल बिछा दूँ
धरने न दूँ अब पग धरा पे राधा तुम्हारे।

धुन मुरली की तुम मधुर बजाते
सुध बुध खोकर हम रह जाते
बैरी तुम्हारी बँसुरी है कान्हा
सास ननद भी सुनाती बातें।

राधा कृष्ण तो एक ही हैं
रुप धरे हैं अनेक प्रिये
देखो छवि तुम अपनी यमुना जी में
मेरी ही छाया पाओगी तुम प्रिये।

पूनम का चाँद

आया पूनम का चाँद
लेके ख़ुशियाँ अपार
राधा हुई बावरी
हुआ ख़त्म मिलन का इंतज़ार
ललिता विशाखा और गोपियाँ
करके श्रृँगार बाट निहारती
कान्हा यमुना पार
महारास का इंतज़ार है
जो होगा सुंदर अपार
धरती भी व्याकुल है
देखने अनुपम छटा
पूनम के चाँद की
होकर मतवाली धरा भी
आज है मस्त मगन
तारे छिटके आसमान में
चाँद भी है अनुपम आभा लिए
अमृत बरसेगा आज
धरा पे होगा महारास आज
देवी देवता सभी हैं आतुर
देखने मिलन राधा कृष्ण का आज
अमृत बरसेगा होगी

पुष्पों की वर्षा आज
जगह जगह होंगे
मंगल गान भी
रिझाने राधा को कान्हा
बजाएँगे मुरली
सुनाएँगे मधुर तान आज
राग रागिनी सभी उतर धरा पर
करेंगी इनका स्वागत आज।

एक ख़्वाब अधूरा सा

हे कान्हा!
क्या मेरे और तुम्हारे,
मिलन की घड़ी,
कभी नहीं आएगी??
हर वक्त तुम्हारा,
करती मैं ध्यान,
करती पूजा पाठ मैं।
लिए आस यही दिल में,
शायद आ जाए कान्हा मेरा,
तकती तुम्हारी राह मैं।
न दिन को आराम न रात को सोना,
बस तुम्हारे ही भजनों में खोना,
तुम्हें पाने की चाह क्या,
मेरी अधूरी रह जाएगी।
क्यों रुलाते हो मुझे,
इतना तड़पाते हो मुझे,
क्या मेरा ये ख़्वाब
अधूरा ही रह जाएगा??
बोलो न कान्हा!
एक ख़्वाब अधूरा सा लिए
मेरा अंत समय आ जाएगा,
क्या उड़ पाएँगे मेरे प्राण पखेरु तुम बिन?
नहीं कान्हा ये सम्भव न हो पाएगा!!

ऋतुराज वसंत

हे कान्हा,
तुम कितना जानें सताते हो,
दिनरात हमें रुलाते हो,
फिर भी जाने क्यों ये मन,
तुम बिन कहीं लगता नहीं,
तुम आते हो तो लगता है,
वसंत की बहार आ गई,
वन उपवन खिल उठते हैं,
यमुना की लहरें ऊँची ऊँची उठती हैं,
मन मयूर नाच उठता है,
चारों ओर ख़ुशहाली छा जाती है,
तुम्हारे जाते ही,
मौसम पतझड़ सा लगता है,
वन उपवन वीरान हो जाते हैं,
यमुना की लहरें मद्धम हो जाती हैं,
ये दिल भी उदास हो जाता,
तुम ऋतुराज वसंत से आते हो,
फिर जाने कहाँ दिल तोड़ चले जाते हो,
जाते ही पतझड़ सा,
जीवन तुम कर जाते हो!!

ज़ख़्म हरे होने लगे

सब कुछ भूल कर,
बढ़ रहे थे आगे कदम,
जब छोड़कर मझदार में,
चले गए थे तुम,
बड़ी मुश्किल से,
संभाला था खुद को,
तुम्हारे बिना,
जीना सीख ही रहे थे हम,
तो क्यों कर भेज दिया,
पास हमारे उद्धव को,
क्या जताना चाहते थे तुम!
बड़ी मुश्किल से,
भर रहे थे तुम्हारे दिए ज़ख़्म,
जो प्रेम कर मिला था तुम्हारे,
उद्धव के आते ही,
फिर ज़ख़्म हरे होने लगे,
तड़पने लगे फिर,
तुम्हारे प्यार में हम!
परिशुद्ध प्रेम था हमारा,
क्या बताएँ कहो तुम कृष्ण,
क्या बना दे मज़ाक़,
अपने प्रेम का,

इस उद्धव को जरा समझा लो तुम!
तुम्हारी याद में,
रोतीं हैं गोपियाँ,
ये राधा तड़पती है,
अधूरी है श्याम तुम बिन!
यमुना के तट सूने हैं,
गोप ग्वाल सब बैठे हैं,
गोकुल की गैय्या भी,
पूछती हैं पता तुम्हारा,
तुम ही कहो,
क्या बताएँ दिल के हाल,
कैसे करें बखान हम,
इसके आते ही,
ज़ख़्म हरे हो गए
दिल के हाल बेहाल हो गए,
हे कृष्ण,
तुम्हीं कहो क्या समझ पाएँगे,
दिल की बात हमारे ये उद्धव,
जिन्हें पता ही नहीं,
प्रेम क्या है,
उन्हें क्या बताएँ हम,
तुम्हीं कहो,
हे कृष्ण!!

भक्ति के रंग

सुनों कृष्ण!
मैं तो तुम्हारी,
भक्ति के रंग में रंग गई,
तुम संग प्रीत कर मैं,
तुम्हारी हो गई!
चढ़ गया मुझ पर रंग तुम्हारा,
हो गया मेरा दिल भी अब तुम्हारा!
न चढ़ पाएगा,
अब कोई दूजा रंग मुझ पर,
रंग लो अब अपने ही रंग मुझको!
रंग जो ऐसा चढ़ा
प्रीत का तुम्हारा,
छुटाए न छूटे,
ये प्रीत का रंग तुम्हारा,
कोई कहता है,
मुझको बावली,
कोई कहता है,
हो गई मैं दिवानी,
अरे! उन्हें क्या पता,
श्याम के रंग रंगने का नशा!
ये वो रंग है,
जो जन्मों तक न छूटेगा,
जिस चढ़ जाए एक बार,
उसे ही पता है,
श्याम रंग रंगने का मज़ा!

कुछ बात तो है

कुछ बात तो है तुममें,
जो लोगों के दिलों में बसते हो,
हर कोई तुम्हारा,
दीवाना बना फिरता है,
चाहे हो कोई गोप ग्वाल,
हो चाहे कोई गोपियाँ,
हर ब्रजवासियों के मन में बसते हो,
बच्चे हो या बूढ़े,
सभी को प्यारे लगते हो,
राधा हो या मीरा,
सत्यभामा हो या रुक्मणी,
सभी करतीं हैं तुमसे प्रेम,
भाव भले हों सबके अलग अलग पर,
राज दिलों में इनके करते हो,
ब्रज नारियों को तुम बहुत सताते हो,
डाँट भी उनकी खाते हो,
फोड़ते हो मटकियाँ उनकी,
माखन भी खूब चुराते हो,
फिर भी जाने क्या बात है तुममें,
माखन रोज़ ले आती हैं,
प्रेम से तुम्हें खिलाती हैं,
कुछ बात तो है तुममें,
राधा में तुम,
तूममें राधा बसती है!!

विलंब

जाने कितने युग बीते,
राह तकते नैना तरसे,
जबसे छोड़ी तुमने,
वृंदावन मथुरा नगरी,
लौट कर न आए तुम,
मोहजाल में फँसा के कान्हा,
जाने कौन से देश बस गए तुम,
अब विलंब न तुम तनिक करना,
प्राण जाने के पहने दर्शन तुम देना,
अखियाँ प्यासी हैं कान्हा,
दर्शन को तेरे,
आस लिए बैठी हूँ मैं,
यमुना के तीरे!!

सुदर्शन

हे कृष्ण!
उठा लो अपना अब सुदर्शन चक्र!
विपदा में है धरती सारी
सम्भालो अब है तुम्हारी बारी!
कही हो रही, भारी बारिश
आ रहा कहीं समुद्री तूफ़ान भारी!

ओमेक्रान का डर बढ़ रहा
निकल रहे मरीज़ जगह जगह
रक्षा करो हे बाँके बिहारी!
नए वर्ष के आगमन पर
विनती बारंबार हमारी
रख लेना तुम लाज बनवारी!

इस बार सुदर्शन चक्र से
करना ऐसा कमाल
भक्ति भाव से भर उठे सारा संसार!
दुष्टों का तुम करना नाश
संग अधर्मियों का करना उद्धार
निज धर्म पथ पर मैं चलूँ देना ऐसा आशीर्वाद!

हे सुदर्शन चक्र धारी, विनती बारंबार
सब सुरक्षित रहें ऐसा देना वरदान!

पूनम का चाँद

आया पूनम का चाँद
लेके ख़ुशियाँ अपार
राधा हुई बावरी
हुआ ख़त्म मिलन का इंतज़ार
ललिता विशाखा और गोपियाँ
करके श्रृँगार बाट निहारती
कान्हा यमुना पार
महारास का इंतज़ार है
जो होगा सुंदर अपार
धरती भी व्याकुल है
देखने अनुपम छटा
पूनम के चाँद की
होकर मतवाली धरा भी
आज है मस्त मगन
तारे छिटके आसमान में
चाँद भी है अनुपम आभा लिए
अमृत बरसेगा आज
धरा पे होगा महारास आज
देवी देवता सभी हैं आतुर
देखने मिलन राधा कृष्ण का आज
अमृत बरसेगा होगी

पुष्पों की वर्षा आज
जगह जगह होंगे
मंगल गान भी
रिझाने राधा को कान्हा
बजाएँगे मुरली
सुनाएँगे मधुर तान आज
राग रागिनी सभी उतर धरा पर
करेंगी इनका स्वागत आज

ऋतुराज वसंत

हे कान्हा,
तुम कितना जानें सताते हो,
दिनरात हमें रुलाते हो,
फिर भी जाने क्यों ये मन,
तुम बिन कहीं लगता नहीं,
तुम आते हो तो लगता है,
वसंत की बहार आ गई,
वन उपवन खिल उठते हैं,
यमुना की लहरें ऊँची ऊँची उठती हैं,
मन मयूर नाच उठता है,
चारों ओर ख़ुशहाली छा जाती है,
तुम्हारे जाते ही,
मौसम पतझड़ सा लगता है,
वन उपवन वीरान हो जाते हैं,
यमुना की लहरें मद्धम हो जाती हैं,
ये दिल भी उदास हो जाता,
तुम ऋतुराज वसंत से आते हो,
फिर जाने कहाँ दिल तोड़ चले जाते हो,
जाते ही पतझड़ सा,
जीवन तुम कर जाते हो!!

मुझे अपने ही रंग में रंग लो

मुझे अपने ही रंग में रंग लो,
ओ मेरे श्याम सांवरे,
हो मेरे श्याम साँवरे,
प्रेम का रंग चढ़ा जो मुझ पर तेरा,
सुध बुध खो गई मेरी,
मेरा चैन वैन है देखो खोया, मुझे.....

हुई बावरी फिरती हूँ मैं,
लाज शरम सब खोया
तन मन मेरा भीगा तेरे प्यार में मोहन प्यारे, मुझे .....

सखियाँ मेरी चिढ़ावै मुझे दे दे के ताने,
समझ न आए मुझको,
मैं जाऊँ किट रंग छुढ़ाने, मुझे.....

सास नंद मोहे गारी देती,
कौन के रंग तू रंग आई,
कैसे कह दूँ श्याम पिया मैं
रंग गई तेरे रंग में, मुझे .....

चुनरी जा जमुना के जल में धो आई मैं कान्हा,
लाज के मारे घर में बैठी,
कैसे आऊँ मिलने तुमसे तुम्हीं कहो ओ कान्हा, मुझे.....

मेरी लाडो है बड़े भागों वाली

ओ कान्हा अब तो तुम आ जाओ
लोरी प्यारी सुना जाओ
तुम लाडो को मेरी
प्यारी प्यारी है ये
दुनियाँ से है न्यारी ये
सारे घर की है राज दुलारी
मेरी लाडो है बड़े भागों वाली!

राधा रानी को भी संग ले आना
संग ललिता विशाखा को ले आना
झूला वो उसे झुलाएँगी
राधा लोरी मधुर सुनाएँगी
लाडो मीठी नींद सो जाएगी
सपनों में फिर वो कखो जाएगी!

सपनों में खोकर वो
दूर परियों के देश चली जाएगी
लाल परी संग खेलेगी,
रंग बिरंगी तितलियों के बीच,
मस्त गगन में उड़ती चली जाएगी
नील परी संग नील गगन में
मेरी लाडो रानी खो जाएगी!

कान्हा तुम प्रेम के गीत सुना जाना
मेरी लाडो को धीरे से थपकी दे जाना
अपनी गोदी में रख कर सिर
उसे प्रेम से जरा सहला जाना
बड़ी भागों वाली है लाडो हमारी
जो कान्हा सुनाएँ उसे लोरी प्यारी प्यारी
संग राधा झुलाएँ उसे झूला,
हमारी लाडो सबकी प्यारी बड़ी भागों वाली है!

झूले पड़ गए बाग में

झूले तो पड़ गए बाग में,
चलो सखी झूलन हो,
हो री सखी चलो सब झूलन हो!

झूला डरे हैं अमवा की डार में हो,
चलो सखी झूलन चलो हो,
हो री सखी चलो सब झूलन हो!

आ गई सखी देखो सावन तीज हो,
देखो सखी सज गए बाग हो,
हो री सखी देखो सज गए बाग हो!

यमुना के तीरे कदम्ब की डार हो,
झूला पड़े हैं झूले नंदलाल हो,
हो री सखी झूले नंदलाल हो!

झूला झूले कान्हा नंदलाल पियारे,
झूलावे राधा रानीवृषभानु दुलारी हो,
हो री सखी वृषभानु दुलारी हो!

झूले राधा रानी झुलावैं कन्हैया,
झूला सजो है बड़ों न्यारो हो,
हो री सखी बड़ो न्यारो हो!

सुंदर सुंदर नगीना जड़े हैं,
सुंदर सुंदर रेशम डोर लगी हो,
हो री सखी रेशम डोर लग हो!

कैसी सुंदर लगे है युगल छवि,
प्यारी लगे है राधा जूँ हो,
हो री सखी राधा जूँ हो!

दया

अब तो दया करो ही कृष्ण कन्हाई,
हम सब पर कैसी ये विपदा है आई,
चारों ओर हाहाकार मचा है,
नहीं है यहाँ अब कोई सुनवाई!

करुणा करो ही करुणा निधि,
जतन कर रहे हैं सब सभी विधि,
राह नहीं है कोई अब बची,
प्राण बचाओ अब आके आप कोई विधि!

हे कृष्ण सुनों ये करुँण रुदन तुम,
राह निकालो कोई तो आके तुम,
थाम लो हाथ हमारा हे पालनहार,
आस तुम्हीं हो विश्वास भी हो तुम!

दिखा दो अपनी चुटकी का कमाल,
कर दो अब तुम कोई कमाल,
नैना सबके रह निहारे निस दिन,
कन्हैया ही करेंगे अब कोई कमाल!

क्या बूढ़ा क्या बच्चा देखो,
मर रहे हैं हज़ारों रोज़ देखो,
घर उजड़ रहा किसी का उजड़ रहा संसार,
आओ कृष्ण जरा ये सब आके देखो!

कैसे मौन बैठे हो अब तक,
जाने किस बात की राह देख रहे हो अब तक,
करो आकर तुम सबका बेड़ा पार,
कहो न और मौन रहोगे कब तक!

लौट आओ न

हे कृष्ण!
हुए बहुत दिन गए तुम्हें,
छोड़ वृंदावनधाम,
सूनी गोकुल की गलियाँ,
सूने ब्रजधाम,
सूने सूने यमुना के तट,
तरसे धुन मुरली को कान!
लौट आओ न
हे कृष्ण कन्हाई,
तरसे नैना,
दरश को तुम्हारे,
बरसे चारों याम!
गोप ग्वाल सब,
हुए बावरे तुम बिन,
मेरे श्याम,
जबसे गए मथुरा नगरी,
भूल गए तुम श्याम!
गोकुल छोड़ा
मथुरा छोड़ी,
जाए बसे तुम,

द्वारकापुरी में श्याम!

भूल गए तुम हमें,

एक पल में,

लाज न आई तनिक घनश्याम,

लौट आओ न तुम,

कृष्ण कन्हाई फिर से गोकुल धाम,

दर्शन दो तुम हे गिरधारी,

नटवर नागर श्याम!!

सखा

हे कृष्ण!
क्या कहकर बुलाऊँ,
मैं तुम्हें,
सखा कहूँ, मित्र कहूँ,
कहूँ तुम्हें,
मैं भाई,
या कहूँ,
पालनहार तुम्हें,
क्या कहूँ,
तुम ही कहो,
हर सुख, हर दुःख,
अपने,
तुमसे कह लेती हूँ,
अपने दुःख,
तुमसे कह मैं
अपनी पीर,
कम कर लेती हूँ,
रोती हूँ,
सामने तुम्हारे,
कभी मैं,
हँस लेती हूँ,
सब कुछ,
सिर्फ़,
तुमसे कहती हूँ,

कभी, आक्रोश में,
कभी, प्रेम में,
कभी, तन्हाई में,
कभी,
सुख सुविधाओं में,
हर पल, हर क्षण,
मैं तुम्हें,
याद करती हूँ,
नहीं सोचती,
कहने के पहले,
क्या कहूँ,
कैसे कहूँ,
बस मैं,
दिल का ग़ुबार,
तुमसे कह देती हूँ,
तुमसे अच्छा,
न मित्र कोई,
इस जग में मेरा,
तुमसे है,
अनोखा नाता मेरा,
तुम ही कहो,
सच कहती हूँ न,
मेरे सखा, मेरे मीत,
हे कृष्ण!!

राग-विराग

सुनों कृष्ण!
नहीं चाहिए मुझे,
दुनियाँ से कुछ,
राग है,
तो चाह है,
चाहिए मुझे सिर्फ़,
एक तुम्हारा,
साथ है,
दे दो विराग,
मोह माया के,
बँधन से,
करो मुक्त,
इस दुनियाँ की,
चकाचौंध से,
चैन और सुकून,
सिर्फ़ तुम्हारे,
चरणों में हैं,
राग-विराग चाहिए,
राग तुमसे,
विराग दुनियाँ से,
मुझे चाहिए,

तुम्हारी,
भक्ति भाव,
तुम्हारी,
सेवा चाहिए,
नहीं ये,
दौलत,
काम की कोई,
न काम आएगी,
रिश्ते नातेदारी कोई,
मुझे तो तुम्हारे,
प्रेम में डूबना है,
तुम्हारे चरणों में,
जगह चाहिए,
बोलो कृष्ण,
करोगे न,
मेरी ये चाहत,
तुम पूरी,
आशा है,
मुझे पूरी,
नहीं निराशा चाहिए!!

जब भी दूँ आवाज चले आना

हे कृष्ण!
जब भी मैं
किसी मुसीबत में रहूँ
जब भी मुझे तुम्हारी
ज़रूरत हो
जब भी दूँ आवाज़ तुम चले आना
जाते हो हो जाओ
तुम हमें छोड़कर
नहीं रोकते हम तुम्हें
करने तुम्हारे कर्म को
फ़र्ज़ हैं जो
निभाओ तुम अपने
सह लेंगे, हर ग़म
हर ज़ख़्म हम
जो लगेंगे
हमारे दिल पर
तुम्हारे जाने से
हाँ!
अगर तुम्हें कभी
हमारी आए याद
तनिक न करना
संकोच तुम
कर लेना दिल से
हमको याद

खिंचें चले आएँगे हम
न होगा कष्ट तुम्हें
न सताएगी फिर
हमारी याद
मूँद लेना आँखे अपनी
दिल पर रख लेना हाथ
महसूस तुम करना
पाओगे अपने साथ
हाँ!
बस तुम
चाहे रहो कहीं
पर न छोड़ना मेरा हाथ
सदा निभाना मेरा साथ
मन, कर्म, वचन से
देती हूँ
में आज वचन
तुम्हें छोड़
मैं नहीं जाऊँगी कही
रहो कहीं तुम मगर
पाओगे हमेशा मुझको साथ
जब भी दूँ आवाज़ तुम्हें
चले आना तुम चुपचाप
बिना किसी सवाल जवाब के
निभा लेना मेरा साथ!

ये वादा रहा तुमसे

सुनों!!
कृष्ण,
क्यों पूछती है दुनियाँ??
तुम्हारे और मेरे
रिश्ते का नाम!!
क्यों,
आख़िर क्यों??
क्यों नहीं,
समझ पाते लोग,
हमारे परिशुद्ध प्रेम को!!
क्यों नहीं समझते,
हमारी भावनाओं को।
कब तक,
कृष्ण,
आख़िर कब तक??
देना होगा हमें,
इनके सवालों के जवाब।
कितनी परीक्षाएँ,
देना होगा हमें,
कब तक,
बोलो कृष्ण !!

सुनों!!

राधे,

नहीं ज़रूरत,

हमें कुछ भी कहने की,

हमारा प्रेम परिशुद्ध है।

इसे किसी नाम की,

आवश्यकता ही नहीं।

ये प्रेम ही है,

जिस पर दुनियाँ टिकी है।

राधे !!

आज,

ये वादा रहा तुमसे

कोई न पूछेगा,

अब तुमसे,

जब तक राधा है,

जब तक,

तुम्हारा प्रेम है,

तब तक ये कृष्ण है,

राधे के बिना,

कृष्ण कुछ भी नहीं।

राधा जीवन आधार है,

राधा से ही,

सारा संसार है,
ये दुनियाँ जब तक रहेगी,
राधे कृष्ण के,
प्रेम और समर्पण की,
गाथा युगों युगों तक रहेगी।
कृष्ण के पहले,
राधा का नाम होगा,
राधे बिना कृष्ण की,
पूजा अधूरी होगी।
राधा प्रेम की देवी है,
राधे राधे कहते जी,
सबकी पीर,
क्षण में दूर होगी!!

तुम हो तो मैं हूँ

हे कृष्ण !
मेरी हर साँस में,
बसते हो तुम,
मेरी हर पीड़ा,
हर लेते हो,
क्षण में तुम!
तुमसे ही हर बात,
कह लेती हूँ,
कर लेती हूँ,
हल्का मन!
तुम हो तो मैं हूँ,
तुम बिन अधूरा,
मेरा जीवन !
तुमसे ही बँधी,
डोर मेरे जीवन की,
तुमसे मैं हूँ,
मुझसे तुम हो,
तुमसे है,
मेरा जीवन!!

जन्म जन्म

हे मनमोहन श्याम मेरे
विनती बारम्बार यही
जब तक हूँ दुनियाँ में
सेवा करूँ मैं तेरी

जन्मों जन्मों का नाता है
तेरा और मेरा यही
मैं भक्त और तू भगवान
भक्ति मिले सदा यही

चरणों में तेरे वंदन
बारम्बार श्याम मेरे
बीते चरणों में तेरे
आठों याम हरि मेरे

मोह माया के बँधन से
मुक्ति मुझको देना प्रभु
धान दौलत और हीरे मोती के
फेर में न पड़ूँ कभी

प्रेम का भूखा हूँ श्याम
दिन रात करूँ मैं भक्ति तेरी
इतना करना स्वामी
प्राण तजुँ मैं शरण तेरी

नाम – अदिति रुसिया

जन्म – 16/04/1972

जन्म स्थान – जबलपुर

शिक्षा – बी.ए. (पंडित रविशंकर यूनिवर्सिटी)

पिता – स्व. श्री सतीश चंद्र गुप्ता

माता – श्रीमती मंजुला गुप्ता

पति – श्री संजय रुसिया

बेटा – कार्तिक रुसिया

बेटी – डॉ. कावेरी रुसिया

कार्यक्षेत्र – गृहणी

ईमेल – aditirusia@gmail.com

प्रकाशन – जीवन की धूप छांव (काव्य संग्रह), विचार मंथन (साझा–संकलन), कथा सेतू (साझा–संकलन), वूमन आवाज (नारी से नारी तक), स्त्री विमर्श, रिश्तों की डोर, और भी कई कहानी संग्रह, समय का पहिया, पीर धरा की कई काव्य संग्रह अंतरा शब्दशक्ति, लोकजंग एवं मातृभाषा उन्नयन संस्थान में अनेक रचनाऐं प्रकाशित।

सम्मान – अंतरा शब्दशक्ति सम्मान, भाषा सारथी सम्मान, वुमन आवाज सम्मान, भाव भाषा निर्झरिणी सम्मान, साहित्यकार स्वाभिमान सम्मान साहित्यिक गतिविधियों में कई सम्मान प्राप्त हुए।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/

978-93-90995-87-5

मूल्य- 200/-

15, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331, मो.- 9009423393, ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com